वर्ष 2018

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

[redacted]

पुस्तिका का क्रमांक 2325291

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

1	8	3	4	2	7	7	9	6

शब्दों में

एक	आठ	तीन	चार	दो	सात	सात	नौ	छः

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 14 (उ.मा.वि.)

ग :— परीक्षा का दिनांक 27 03 2018

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSC EXAM. केन्द्र क्रमांक 341012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

R.K. Prajapati

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा / परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

G.G.H.S.S. Soyatkalan
V. No.- 6292

शकुन्तला भिलाला
वरिष्ठ अध्यापक
मो. 8989078298
परीक्षक क्र.- 6199
शा. उत्कृष्ट उ.मा.वि. आगर

लव कुमार पाटीदार अध्यापक
शा. हाई स्कूल गोदलमऊ
V.No. 6434

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

→ प्रश्न क्र. 1 का उत्तर →

i) द) प्रेम मार्गी
ii) ब) पद्माकर
iii) स) आस्तिक
iv) द) व्यंग्य निबन्ध
v) स) अज्ञेय

→ प्रश्न क्र. 2 का उत्तर →

B S E

i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
ii) कुण्डलियाँ
iii) बिहारी
iv) मुंशी प्रेमचन्द
v) गौण

→ प्रश्न क्र. 3 का उत्तर →

i) सत्य
ii) असत्य
iii) सत्य
iv) सत्य
v) सत्य

3

योग पूर्व पृष्ठ + = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

!- प्रश्न क्र. 4 का उत्तर -!

i) रामचरित मानस - च) महाकाव्य
ii) गेहूँ और गुलाब - क) रामवृक्ष बेनीपुरी
iii) दोपहर - ख) द्विगु समास
iv) बेटियाँ पावन दुआएँ हैं - छ) अजहर हाशमी
v) भगिनी निवेदिता - घ) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

!- प्रश्न क्र. 5 का उत्तर -!

i) धर्मवीर भारती
ii) गाँवों में
iii) विभाव
iv) जब गुण का पारखी मिल जाता है, तब गुण लाख रुपये में बिकता है।
v) जगन्नाथ - जगत् + नाथ - व्यंजन सन्धि

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 4 के अंक	=	कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

:- प्रश्न क्र. 6 का उत्तर :-

'स्तुति खण्ड' में जायसी ने सात द्वीपों और चौदह भुवनों की चर्चा की है।

:- प्रश्न क्र. 7 का उत्तर :-

बच्चे की आँखों की तुलना 'तितली के पंखों' से की गई है।

:- प्रश्न क्र. 8 का उत्तर :-

कवि ने हिमालय की झीलों में हंसों को तैरते हुए देखा है।

:- प्रश्न क्र. 9 का उत्तर :-

जीवन को सफल बनाने के लिए कवि लोक कल्याणकारी कार्यों में लगे रहने का निर्देश देते हैं।

5

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ	कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

-: प्रश्न क्र 10 का उत्तर :- (अथवा)

कवि नियति से प्रश्न करते हैं कि जब तू ने गरीब को खाली पेट दिया है, तो फिर उसे टेकने के लिये घुटने तथा माँगने के लिए हाथ देने की क्या आवश्यकता थी।

-: प्रश्न क्र 11 का उत्तर :- (अथवा)

कृष्ण ने शिशुपाल का वध करके महिष्पति की गद्दी पर धृष्टकेतु को बैठाया।

-: प्रश्न क्र. 12 का उत्तर :- (अथवा)

पृथ्वी पर मानव अपने साथ भूख और प्यास लेकर आया है।

-: प्रश्न क्र 13 का उत्तर :- (अथवा)

महाराणा लाखा वीरसिंह की वीरता को देखकर प्रसन्न हुए।

B
S
F

6

[ ] + [ ] = [ ]

योग ६ पृष्ठ 6 के अंक कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHAYPRADSEH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCA

प्रश्न क्र.

:- प्रश्न क्र १५ का उत्तर :- (अथवा)

यक्ष के, संसार के सबसे बड़े आश्चर्य सम्बन्धी प्रश्न पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि प्रतिदिन कितने ही प्राणियों को आँखों के सामने मृत्यु के मुख में जाता हुआ देखकर भी बचे हुए प्राणी, जो यह सोचते हैं कि 'हम अमर रहें', यह महान् आश्चर्य की बात है।

B
S
E

:- प्रश्न क्र १५ का उत्तर :- (अथवा)

i) उपासक।
ii) पुजारी।

:- प्रश्न क्र १६ का उत्तर :- (अथवा)

वात्सल्य रस :-

सहृदय के हृदय में स्थित 'वत्सल' नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग होता है, तब वहाँ 'वात्सल्य रस' की निष्पत्ति होती है।

उदा० :- "धूरि भरे अति शोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।"

7

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 7 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्र. क्र.

:- प्रश्न क्र. 17 का उत्तर :-

भगिनी निवेदिता भारतीय नारियों के गुणों से अत्यधिक प्रभावित थीं। वह भारतीय नारियों को शिक्षित करना तथा आत्मनिर्भर बनाना चाहतीं थीं। उन्होंने अपने निवास के पास लड़कियों के लिए एक विद्यालय खोला। इसमें वे पढ़ाती थीं तथा लड़कियों को मिट्टी के काम, मूर्ति बनाना आदि सिखाती थीं। वे भारतीय नारियों को सभी गुणों के साथ शिक्षित देखना चाहतीं थीं। वे भारतीय नारियों में पत्नी की पवित्रता, पतिव्रता धर्म, माता की निःस्वार्थ ममता तथा स्नेहपूर्ण वात्सल्य का गुणगान करती थीं।

:- प्रश्न क्र. 18 का उत्तर :-

अन्योक्ति अलंकार :- जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो अर्थात जहाँ कोई बात प्रत्यक्ष रूप से न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदा०- "माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि।
फूले फूले चुन लिये, कालिह हमारी बारि।।"

8

कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर :-

i) परमानंद – परम + आनंद – दीर्घ स्वर सन्धि
ii) निर्गुण – निः + गुण – विसर्ग सन्धि
iii) जगदीश – जगत् + ईश – व्यंजन सन्धि

प्रश्न क्र. 20 का उत्तर :- (अथवा)

B
S
E

भारतेन्दु युगीन काव्य की विशेषताएँ :-

i) राष्ट्रीयता की भावना :- भारतेन्दु युगीन कवियों ने देश-प्रेम की रचनाओं के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय बीजारोपण किया है।

ii) सामाजिक चेतना का विकास :- भारतेन्दु युगीन कवियों ने समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों एवं सामाजिक रूढ़ियों को दूर करने हेतु कविताएँ लिखी हैं।

iii) अंग्रेजी शिक्षा का विरोध :- इस काल में अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रति विरोध प्रकट किया गया है।

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

क्र.

iv) विभिन्न काव्यरूपों का प्रयोग :- इस काल में काव्य के विविध रूप दिखायी देते हैं; जैसे - मुक्तक काव्य, प्रबन्ध काव्य आदि।

भारतेन्दु युगीन कवियों के नाम व उनकी रचनाएँ :

नाम		रचनाएँ
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	-	प्रेम सरोवर, प्रेम मल्लिका
राधाचरण गोस्वामी	-	नवभक्त माल

प्रश्न क्र. का उत्तर :

जीवनी :- जीवनी में लेखक किसी दूसरे व्यक्ति का जीवन चरित्र प्रस्तुत करता है। इसमें प्रायः जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी घटनाएँ होती हैं। जीवनी में नायक के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन होता है। इस प्रकार

"किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का लिखा हुआ विवरण जीवनी है।"

जीवनी लेखकों के नाम व उनके द्वारा लिखित जीवनी :-

नाम		जीवनी
अमृतराय	-	कलम का सिपाही
विष्णु प्रभाकर	-	आवारा मसीहा

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 के अंक =

प्रश्न क्र. :- प्रश्न क्र 22 का उत्तर :- (अथवा)

सुभद्रा कुमारी चौहान

i) दो रचनाएँ :-
(i) काव्य कृतियाँ - मुकुल और त्रिधारा।
(ii) कहानी - बिखरे मोती, उन्मादिनी।

ii) भावपक्ष :-
सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में समसामयिक, देशप्रेम, भारतीय इतिहास और संस्कृति की गहरी छाप पड़ी है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी काव्यगत विशेषता से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं को तत्कालित राजनीतिक संदर्भों से जोड़कर नव जागरण का शंखनाद किया है। जन-जन में देश-प्रेम, त्याग और बलिदान का अलख जगाने में आपके काव्य की महती भूमिका रही है।

ii) कला पक्ष :-
सुभद्राकुमारी चौहान अपनी सहज, सरल और सामान्य बोलचाल की स्वाभाविक भाषा में जटिल-से-जटिल भावो को बड़ी सादगी से व्यक्त करती है। आपकी कविताएँ वीर और वात्सल्य रस प्रधान हैं। गीत और लोकगीतों की गायन शैली में अपने भावों को स्वर देने में आप सिद्ध है। अलंकार और प्रतीकों के मोह से मुक्त अनुभूतियों का सहज प्रकाशन ही आपकी काव्यगत विशेषता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

iii) साहित्य में स्थान :-

राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका सुभद्राकुमारी चौहान मूलत: वीर रस की कवयित्री हैं। देश में स्वाभिमान एवं बलिदान का संचार करने वाले कवियों में आपका स्थान प्रमुख है।

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

i) दो रचनाएँ :-

i) उरज्योति।

ii) माताभूमि।

ii) भाषा :-

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने सुदृढ़, साहित्यिक एवं विषयानुकूल खड़ी बोली को अपनाया है। आपकी भाषा में अद्भुत प्रवाह तथा स्वाभाविकता है। जिसे पाठक पढ़कर मुग्ध रह जाते हैं। आपकी रचनाओं में मुहावरे तथा सूक्तियाँ भी बहुतायत से मिलती हैं। छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर जीवन के बड़े-बड़े सत्यों का उद्घाटन आप बड़ी सहजता के साथ करते हैं। नवीन मुहावरों एवं कहावतों की सर्जना भी करते रहे।

प्रश्न क्र.

शैली :-

आपकी रचनाओं में विषयानुरूप शैलियों का प्रयोग हुआ है। आपकी शैली में भाषा के प्रवाह के साथ - साथ भावों और विचारों का सुन्दर विवेचन भी है। इन्होंने अपने निबन्धों में भावात्मक, विचारात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक एवं संवाद आदि विविध शैलियों का प्रयोग किया है।

iii) साहित्य में स्थान :-

आपने अपने कथन की पुष्टि के लिये हिन्दी और संस्कृत का सहारा लिया है। हिन्दी लेखन में इन्होंने विविध दिशाएँ प्रदान की हैं। ~~हिन्दी~~ हिन्दी साहित्य में सशक्त गद्यकार के रूप में आपका महत्वपूर्ण स्थान है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

- प्रश्न क्र 24 का उत्तर -

संकेत :- बैर फूट ------------------ मोह के फाँस ।।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य- पुस्तक 'नवनीत' हिन्दी विशिष्ट के पाठ 'नीति धारा' के अंतर्गत 'नीति अष्टक' नामक शीर्षक से अवतरित है। जिसके रचयिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद में भारत के विनाश का कारण बताया गया है।

व्याख्या :- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बताया है कि भारत के विनाश का कारण आपसी बैर तथा फूट ही है। फिर भी भारतीय मोह- ममता के बन्धन में बंधकर बैर तथा फूट को नहीं मिटा पा रहे हैं। भारत के विकास के लिये आपसी एकता आवश्यक है।

काव्य सौंदर्य :-

1. भारतीयों को जागरूक किया गया है।
2. ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।
3. दोहा छन्द है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा दृष्टव्य है।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 14 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 1. प्रश्न क्र. 25 का उत्तर :- (अथवा)

संकेत :- आधुनिकता ------------ कदम है।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'नवनीत' हिन्दी विशिष्ट के 'परम्परा बनाम आधुनिकता' नामक पाठ से अवतरित है। इसके लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्य में परम्परा का आधुनिकता से सम्बन्ध को बताया गया है।

B
S
E

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि आधुनिकता के सम्प्रदाय का विरोध करने का कारण यह है कि आधुनिकता गतिशील प्रक्रिया होती है जबकि सम्प्रदाय स्थिति का संरक्षक है। किन्तु परम्परा का आधुनिकता से सम्प्रदाय जैसा विरोध नहीं होता है। दोनों ही गतिशील प्रक्रियाएं हैं। दोनों में भिन्नता केवल इतना है कि परम्परा यात्राओं के बीच फंसा हुआ अन्तिम चरण है जबकि आधुनिकता उससे आगे की ओर बढ़ा हुआ एक गतिशील कदम है।

विशेष :- 1. परम्परा और आधुनिकता में सम्बन्ध को बताया गया है।
2. शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

15

[ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ　　पृष्ठ 15 के अंक　　कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र 26 का उत्तर :-

i) अनुशासन और विद्यार्थी जीवन।

ii) अनुशासन और स्वतंत्रता में विरोध मानना भ्रम है। क्योंकि अनुशासन से स्वतंत्रता छीनी नहीं जाती है। अनुशासन से स्वयं की तथा दूसरों के प्राणों की रक्षा होती है। विद्यार्थी भारत के भावी निर्माता हैं। उन्हें अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए।

16

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर (अथवा)

सेवा में,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,

शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,

ग्वालियर (म०प्र०)

विषय :- स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

सविनय नम्र निवेदन है कि मैंने आपके विद्यालय में कक्षा 9वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। संयोगवश मेरे पिताजी का स्थानान्तरण मुरैना के लिये हो गया है। जिसके कारण मेरा पूरा परिवार मुरैना जा रहा है। मैं यहां अकेले रहकर अपना अध्ययन जारी नहीं रख पाऊंगा।

अस्तु :- श्रीमान् जी से विनम्र निवेदन है कि मुझे शीघ्रातिशीघ्र स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्रदाय करने की महती कृपा की जाए।

यदि मेरे भविष्य पर विचार करते हुए आपके द्वारा यह कार्यवाही की जाती है, तो मैं आपका चिरऋणी रहूंगा।

धन्यवाद,

दिनांक- 21/03/2018

आपका आज्ञाकारी शिष्य

नाम- अ ब स

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

क्र.

— प्रश्न क्र 28 का उत्तर :-

अ) i) विज्ञान की देन

रूपरेखा :-

i) प्रस्तावना।
ii) विज्ञान वरदान के रूप में।
iii) विज्ञान अभिशाप के रूप में।
iv) उपसंहार।

एमसन नामक विद्वान के शब्दों में –
"आज हम विज्ञान के युग मे रह रहे हैं।
विज्ञान के बिना मानव के अस्तित्व की कल्पना
असम्भव प्रतीत होती है।"

विज्ञान शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– वि + ज्ञान
'वि' का अर्थ है 'विशेष'। इस प्रकार विज्ञान
का अर्थ होता है – 'विशेष ज्ञान'

परिभाषा :- प्रकृति के क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान
को विज्ञान कहते हैं।

"गूंज रही है बिगुल ज्ञान की।
हो रही सर्वत्र जय विज्ञान की॥"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

i) प्रस्तावना :-

आज का युग विज्ञान का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे विज्ञान का बोलबाला है। चहुँओर विज्ञान की दुन्दभी बज रही है। मानव जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है। जहाँ विज्ञान का प्रवेश न हो। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव सतत् प्रयत्नशील रहता है। इन प्रयासों मे नित्य नये वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रादुर्भाव होता है, जो कभी वरदान बनकर हमारे लिये खुशियों की सौगात् लाते हैं, तो कभी अभिशाप बनकर हम पर कहर ढाते हैं। इस विज्ञान की प्रगति विगत् दो सौ वर्षों में हुई है। पुरातन काल में भी वैज्ञानिक उपलब्धियों का उल्लेख है, परंतु इस बात की कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है।

विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं। इन परिवर्तनों से दुनिया का मानचित्र ही बदल गया है। वह समय अतीत के गर्भ में विलीन हो गया। जब मानव दुनिया की हर वस्तु को अचम्भे भरी दृष्टि से देखकर उसकी उपासना किया करता था। आज वे वस्तुएं ही उसके जीवन में पानी मे नमक के समान घुल- मिल गयी हैं।

ii) विज्ञान वरदान के रूप में :-

विज्ञान ने मानव जीवन को सुखी तथा सम्पन्न बना दिया है। उदाहरणार्थ-

19

[ ] + [—] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 19 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

क्र.

अ) चिकित्सा के क्षेत्र में :-

विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में तो कमाल ही कर दिखाया है। एक्स-रे के द्वारा शरीर का आंतरिक फोटो लिया जाता है। इससे अनेक घातक बीमारियों का पता लगाया जा सकता है। टी.बी. की बीमारी को विज्ञान ने अतीत की बात बना दिया है। कैंसर के क्षेत्र में नित्य नये शोध चल रहे हैं। मानव की आयु में औसतन वृद्धि हुई है। ऑपरेशन के द्वारा न जाने कितने ही मनुष्यों को नयी जिन्दगी जीने का अवसर मिला है।

ब) उद्योग और विज्ञान :-

प्राचीन काल में जिस कार्य को सौ आदमी करते थे, आज उसे विज्ञान के द्वारा आविष्कृत मशीनों का उपयोग करके एक आदमी ही पूरा कर लेता है। इस प्रकार मशीनों से उत्पादन क्षमता कई गुनी अधिक बढ़ गई है।

स) आवागमन के क्षेत्र में :-

विज्ञान ने आवागमन के साधनों को सुलभ बनाया है। प्राचीन काल में यात्राएं भय तथा कष्ट का प्रतीक हुआ करती थीं। किन्तु आज बस, कार, रेल, मोटर साइकिल, हवाई जहाज आदि का उपयोग करके मानव दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक आसानी से पहुंच सकता है। जहाज के द्वारा मनुष्य समुद्र को भी लाँघ सकता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

iv) भवन निर्माण के क्षेत्र में :-
वर्तमान में बहुमंजिली इमारतें विज्ञान के बल पर ही खड़ी हो रही हैं। बुलडोजर, क्रेन, खनन मशीन इस क्षेत्र में अधिक लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं।

v) शिक्षा के क्षेत्र में :-
विज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में विकास किया है। आज कम्प्यूटर के द्वारा शिक्षा दी जा रही है। कम्प्यूटर के माध्यम से अनेक स्थानों पर एक ही समय में शिक्षा दी जा रही है।

B S E

vi) मनोरंजन के क्षेत्र :-
मोबाइल, टेलीफोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर, रेडियो, सिनेमा आदि अनेक ऐसे मनोरंजन के साधन हैं, जो विज्ञान ने मानव को दिये हैं।

" विध्वंस की सोचे नहीं,
निर्माण की गति और दें।
विज्ञान के उत्पाद से,
सुख स्वयं लें, औरों को दें ॥

iii) विज्ञान अभिशाप के रूप में :-
विज्ञान ने मानव के लिये जहाँ अपरिमित सुख-साधन जुटाये हैं। वहीं इन साधनों से मानव को हानि भी होती है। आज का मानव वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करके आलसी

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय: हिन्दी | विषय कोड: 0 0 1 | परीक्षा का माध्यम: हिन्दी | परीक्षा का दिनांक: 27 03 18

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: HSC EXAM. केन्द्र क्रमांक 341012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Rambal patel (R patel)

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

हो गया है। प्राचीन काल मे जिस कार्य को सौ आदमी करते थे, आज उसे वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करके एक आदमी ही पूरा कर लेता है। इस प्रकार विज्ञान ने एक आदमी को रोटी देकर निन्यानवे लोगों के पेट पर लात मार दी है।

विज्ञान के बसन्त के पीछे पतझड़ की काली छाया है। आज वैज्ञानिक आविष्कारों की विनाश लीला जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी नगरों मे विनाश के खण्डहर दुहरा रहे है। आज का मानव विलासी हो गया है। पर्यावरण प्रदुषित है। वायुयान, मोटर तथा स्कूटर उसे बहरा बना रहे है। वर्तमान मे मानव की जिन्दगी बहुत सस्ती हो गयी है। विज्ञान ने अनेक घातक हथियारों का आविष्कार किया है, जो मानव जीवन के लिए अभिशाप है।

B S E

पृष्ठ के अंकों का योग

" दूर तारों से किया सम्पर्क हमने,
पर पड़ोसी से न हँस-बोल पाये।
सरल जीवन से रहा न वास्ता,
दुश्वारियों को दौड़कर हम मोल लाये॥"

iv) उपसंहार :-

परंतु एक बात ध्यान देने योग्य है कि विज्ञान स्वयं में कोई शक्ति नहीं है। वह मानव के हाथ में आकर ही शक्ति प्राप्त करता है। अब यह मानव पर निर्भर करता है कि वह विज्ञान का सदुपयोग करता है या दुरूपयोग। विष डॉक्टर के हाथ में पहुँचकर जीवन-दायक बनता है और हत्यारे के हाथ में पहुँचकर जानलेवा बनता है। यही बात विज्ञान पर लागू होती है। महत्वाकांक्षी तथा नरपिशाच लोग विज्ञान का दुरूपयोग करते हैं जबकि मानवतावादी लोग विज्ञान से मानव जीवन को खुशहाल बनाते हैं। हमें अपनी महत्वाकांक्षा पर रोक लगाना होगा। विज्ञान को स्वामी न मानकर दास मानना होगा। तभी मानव विश्व सुख तथा शांति के झूले में बैठकर आनंद का अनुभव करेगा।

" सुख-सुविधाएँ जो हमें दी हैं विज्ञान ने,
हमें इनका सेवक न होकर, इन्हें गुलाम बनाना है।
तभी हम सफल, सक्षम और शक्तिशाली बनेंगे,
विज्ञान के संग स्वयं का अस्तित्व जगाना है।

ब)

i) वृक्षारोपण

रूपरेखा :-

i) प्रस्तावना ।
ii) वन कटाई के कारण ।
iii) वृक्षारोपण के लाभ ।
iv) मानव जीवन में वृक्षों की भूमिका ।
v) वृक्ष : प्रकृति के वरदान ।
vi) उपसंहार ।